कमलादेवी चट्टोपाध्याय

मुक्ता मुंजाल

"मेरी जीवन यात्रा इन दशकों में बहुत लंबी किंतु स्मरणीय रही है, जो पीछे मुड़कर देखने पर संध्यावेला के धूमिल आकाश जैसी लगती है, जिसमें यहां-वहां सितारों की चमक-सी तीव्र चुभन है, एक छोटा-सा दायरा अनंत के विराट में, कगारों के चित्तीदार धब्बे, समृद्ध एवं स्थायी अनुभवों, आकांक्षाओं, हताशाओं, आशाओं व निराशाओं को अपने दामन में समेटे, पर इससे भी बढ़कर, पथ पर ले जाने की यात्रा की अथक ऊर्जस्विता, अधिक समृद्ध और नए अनुभवों की ओर।"

कमलादेवी चट्टोपाध्याय

कमलादेवी चट्टोपाध्याय

आज सारा विश्व, भारतीय हस्तशिल्प के विषय में जानता है। उससे प्यार करता है और उसका उपयोग करता है।

इसका श्रेय किसे जाता है?

इसका श्रेय जाता है कमला देवी चट्टोपाध्याय को। उन्होंने भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक निरंतर यात्रा की। उन्होंने कभी मणिपुर में परंपरागत नृत्य करने वाली मंडलियों की मदद की तो कभी दिल्ली में कुतुब मीनार के निकट गांव में दयनीय गरीब परिवारों को सम्मानजनक जीवन बिताने के लिए सजावट की चीजें बनाने के कार्य में मदद की।

उन्हें "भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पुजारिन" कहा गया है जो पूर्णतः उचित है क्योंकि आधुनिक भारत में वे एक जनश्रुति बन चुकी हैं। कमलादेवी ने समाज से विद्रोह किया। वे एक संघर्षशील योद्धा थीं और जीवन के अंतिम क्षणों तक सक्रिय रहीं। उन्हें ललित कलाओं, रंगमंच तथा संस्कृति से बचपन से ही लगाव रहा। कमलादेवी बहुत ही संवेदनशील महिला थीं। शायद इसी कारण उनके लिए ऋतुओं का त्योहार के साथ और त्योहारों का भारतीय जीवन के साथ सहज संयोजन महत्वपूर्ण था।

सन् 1932 में वे गांधीजी और रवींद्रनाथ टैगोर से शांतिनिकेतन में मिलीं। इस मुलाकात में उन्हें ऐसा लगा जैसे वे उन्हें कोई संदेश दे रहे हों। "टैगोर महसूस करते थे कि संगीत की मदद से व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है जबकि गांधी जी महसूस करते थे कि व्यक्तित्व का निर्माण शिल्प से और हाथों के उपयोग से होता है।"

बचपन

3 अप्रैल, 1903 को मंगलोर के एक सारस्वत परिवार में जन्मीं कमलादेवी चट्टोपाध्याय ही शायद वह विलक्षण व्यक्तित्व हैं 'संजीवन व्यक्ति' की संज्ञा से अभिहित किए जाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। वे अपने पिता अनंतैया धारेश्वर तथा माता गिरजा बाई की चौथी संतान थीं। कमलादेवी के जन्म के समय उनकी बड़ी बहन ही जीवित थीं। दो भाईयों की उनके जन्म से पहले ही मत्यु हो गई थी।

जिस परिवार में कमलादेवी पली-बढ़ीं वह समृद्ध परिवार था। कमलादेवी के पिता अपने श्रम, शक्ति और प्रतिभा से जीवन में आगे बढ़े थे और कलेक्टर के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। जो उन दिनों बहुत महत्वूपर्ण पद था। उनकी माता भी कर्नाटक के सबसे धनी जमींदारों के एक परिवार से थीं।

हालांकि यह परिवार बहुत छोटा था, परंतु उनका विशाल मकान अनेक आश्रित लोगों तथा उन गरीब लड़कों से भरा रहता था जिन्हें कमलादेवी के पिता अपने खर्चे से पढ़ा रहे थे। उन दिनों अमीर लोगों द्वारा गरीब बच्चों की पढ़ाई का खर्च उठाना आम बात थी। कमलादेवी की मां गिरिजाबाई दृढ़ विचारों वाली महिला थीं और वे कुछ नियमों का पालन करने पर जोर दिया करती थीं। इसलिए प्रारंभ से ही वे अपनी मां का विरोध करने लगीं।

कमलादेवी बचपन से ही दृढ़ संकल्प वाली लड़की रहीं। यह बात उनकी समझ से परे थी कि जिन बातों पर उनकी मां जोर दें, उन्हें ही करना क्यों जरूरी है? जबकि वह सब करना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं है। गिरिजाबाई ने यह नियम बनाया था कि बच्चों को हमेशा सफेद वस्त्र पहनने चाहिए ताकि तनिक-सा भी मैल लगने पर तत्काल दिखाई दे जाए। इसके अलावा हर बार भोजन के बाद गरम पानी के गरारे करने तथा सोने से पहले हाथ-पांव अच्छी तरह धोने का नियम था। बहुत ही निडर स्वभाव की कमला देवी को यह सब तकलीफदेह लगा। परंतु बड़ी होने पर उन्होंने इन बातों को अपने जीवन में अपना

लिया। उन्हें बाहर आना-जाना अच्छा लगता था। वे घर के चारों ओर के विशाल मैदान में घूमती रहतीं और नौकरों के बच्चों के साथ खेलती और खातीं।

कल्पनाशील कमलादेवी को घर के चारों ओर बने बाग में हरे भरे पेड़ और झाड़ियां व घास बहुत मनमोहक लगती थी। घर के प्रतिकूल वातावरण से निकलकर वहां उन्हें परीलोक जैसा वातावरण और एक आश्रय स्थल मिलता था। कमला को गौशाला जाना खासतौर पर अच्छा लगता था जहां वह नवजात बछड़े को प्यार कर सकती थीं और उसके साथ खेल सकती थीं।

कमला के पिता अनंतैया कमला के आमोद-प्रमोद और नटखटपन के प्रति सहिष्णु थे। बच्चों के साथ बरताव करने का उनका अपना अलग तरीका था और वे उनके साथ बच्चे बनकर बात कर लेते थे। वे कमलादेवी के विद्रोहात्मक कामों में आनंद लेते थे। अनंतैया ने कभी इस बात पर जोर नहीं दिया कि कमलादेवी प्रकृति का आनंद लेना छोड़कर किताबों से चिपकी रहें। कमला को अध्ययन करना अच्छा नहीं लगता था, लेकिन उसे पढ़ना पसंद था जो उसकी मां ने उसे बहुत पहले सिखाया था।

प्रभाव

और अचानक ही कमला का मौजमस्ती का जीवन समाप्त हो गया। अंनतैया बीमार पड़ गए और उनका स्वर्गवास हो गया। उनकी सारी संपत्ति उनकी पहली पत्नी से हुए बेटे को मिली। गिरिजाबाई को गहरा सदमा लगा। वे कमलादेवी को समझातीं कि हिंदू महिलाओं को विरासत में मां-बाप की संपत्ति नहीं मिलती, अतः लड़कियों की शिक्षा ही उनकी सभी समस्याओं का समाधान है। कमलादेवी को इस घटनाक्रम से झटका लगा और वे अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान देने लगीं।

गिरिजाबाई की मां उनके साथ ही रहती थीं। उनका अपना पुस्तकालय था तथा प्रतिदिन शाम को अनेक विद्वान उनके घर आया करते थे।

कमलादेवी संस्कृत श्लोकों से बहुत प्रभावित थीं। जब भी उनकी नानी उस कमरे में नहीं होतीं थीं तब वे संस्कृत का सबसे बड़ा ग्रंथ उठाकर उनकी कुर्सी पर बैठ जातीं और उसे पढ़ने का दिखावा करतीं। धीरे-धीरे उनके मन में अध्यापक बनने का विचार उठने लगा।

वे घंटों अकेले अपने में मस्त होकर बैठ सकने की अपनी नानी की क्षमता से बहुत प्रभावित थीं। शांत बैठने का यह गुण जीवन भर उनमें बना रहा।

गिरिजाबाई *केसरी* तथा *काल* जैसे राष्ट्रीय अखबार पढ़ा करती थीं जिनमें बाल गंगाधर तिलक के संदेश छपते थे। वर्षों बाद जब कमलादेवी बर्मा जो अब म्यांमार कहलाता है, की माडेल जेल देखने गईं। तो उन्हें तिलक के बारे में पढ़ी सारी बातें याद हो आईं। 1 अगस्त, 1920 को तिलक का स्वर्गवास हुआ तो कमलादेवी को हार्दिक दुख हुआ। वे ऐसे समय विदा हुए जब महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन शुरू करने की योजना बनाई थी।

कमलादेवी के जीवन पर जिस अन्य व्यक्ति का गहरा असर हुआ, वे थीं उनकी मां गिरिजाबाई। उसी प्रभाव के कारण कमला देवी अंधेरे से, भूतप्रेत से या लोगों की बातों से कभी नहीं डरती थीं। वे फालतू की गप्पबाजी से दूर रहते हुए अपना समय पढ़ने में बिताती थीं। रूढ़ियों की उपेक्षा करना उन्होंने अपनी मां से सीखा। जो चीजें औरों के लिए बहुत महत्व रखती थीं, उनके लिए उन चीजों का कोई महत्व नहीं था।

7 वर्ष की उम्र में स्कूल जाना शुरू करने से पहले ही कमलादेवी संगीत की शिक्षा लेने लगी थीं। स्कूली पढ़ाई के दौरान भी उनकी तेजस्विता में कोई कमी नहीं आई। वहां रंगमंच की ओर उनका रूझान हुआ। रंगमंच के प्रति इस रूझान ने आगे चलकर उनके जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भारतीय रंगमंच के विकास व उत्थान पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

छोटी उम्र में ही पढ़ना सीख लेने के कारण कमलादेवी में पढ़ने के प्रति गहरा लगाव पैदा हो गया। यह जाने बिना कि वे क्या पढ़ने जा

रही हैं, उन्हें जो कुछ भी मिलता वे उसे पढ़ डालतीं। बड़ी होने पर उन्होंने यशस्वी व्यक्तियों की जीवनियां पढ़ीं। एनी बेसेंट की जीवनी—*एन ऑटोबायोग्राफी*—की उनके मन पर गहरी छाप पड़ी। एनी बेसेंट के प्रति कमलादेवी के मन में बहुत श्रद्धा थी। उन्हें पौराणिक कथाएं, राजस्थान की वीरता की गाथाएं, ऐतिहासिक कहानियां तथा महिलाओं से संबंधित कहानियां बहुत अच्छी लगती थीं।

कमलादेवी ने सन् 1917 में एनी बेसेंट का भाषण सुना जो उन्होंने इंडियन नेशनल कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी जाने के तुरंत बाद दिया था। इससे पहले जब वे छह—सात साल की थीं तो उनकी मां उन्हें आशीर्वाद दिलाने के लिए एनी बेसेंट के पास ले गई थीं। कमलादेवी को एनी बेसेंट की भारतीय शैली में, भारतीय ढंग से आर्शीवाद देते समय मधुर मुस्कान सदैव याद रही।

उस समय उस नन्ही बालिका में उत्साह की लहर दौड़ गई थी और उन्हें लगा जैसे उस महान महिला की महानता के कुछ अंश का संचार उनमें हो गया जिससे वे भी महान कार्य कर सकेंगी। एनी बेसेंट के भाषण का उनके बालमन पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

कमलादेवी का स्कूल नदी के किनारे वनस्थली में सुंदर प्राकृतिक वातावरण में स्थित था। एक दिन झाड़ी में छिपे एक चोर ने कमलादेवी के गले की माला छीनने की कोशिश की। कमला देवी ने चोर से डटकर मुकाबला किया और उसे भगा दिया।

विवाह

सन् 1920 में कमलादेवी अपनी मां और बहन के साथ चेन्नई गईं। इस यात्रा से उनका पूरा जीवन बदल गया। उनकी मुलाकात उदीयमान कवि एवं लेखक हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय से हुई। वे हैदराबाद में बसे एक प्रतिभाशाली बंगाली परिवार से थे। चट्टोपाध्याय ने कमलादेवी को एक विशाल जनसभा में देखा और उसी दिन शाम को जिस मित्र के पास वे ठहरे थे, उससे बोले कि वे इसी लड़की से शादी करेंगे।

कमलादेवी को शादी के बारे में फैसला करने में काफी समय लगा। वे उनकी पुस्तकों की प्रशंसक थीं, परंतु उन्हें लगता था कि यह व्यक्ति अस्थिर प्रकृति का है। अंततः वे शादी के लिए राजी हो गईं। शादी हो गई, परंतु गिरिजाबाई ने जोर दिया कि शादी के बाद भी कमला देवी पढ़ाई जारी रखेंगी। वे अपनी बेटी को ज्ञान के माध्यम से स्वतंत्र बनाने के लिए कृत संकल्प थीं। परंतु हालात बदल गए। शादी के तीन महीने बाद हरींद्रनाथ इंग्लैंड चले गए और कमलादेवी मंगलौर लौट आईं।

युवा कमलादेवी के जीवन का यह दौर अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया, क्योंकि उसी दौरान उनकी मुलाकात अंगरेज महिला मारगरेट कज़िन से हुई जो ग्रेटा के नाम से जानी जाती थीं। जिन्होंने भारतीय महिलाओं को उदार विचारों की शिक्षा देने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। कमलादेवी पर उनका बहुत गहरा असर पड़ा। उनके मन में समाज, विषेशकर महिलाओं की कुछ सेवा करने की लालसा अब साकार होने लगी थी। ग्रेटा ने उन्हें नारी मुक्ति और मानवता की सेवा का मार्ग दिखा दिया।

पुस्तकों, संगीत, कविता और चित्रकला के प्रति प्रेम के कारण कमला देवी और ग्रेटा के संबंधों में प्रगाढ़ता हो गई। ग्रेटा अक्सर पियानो बजातीं और कमलादेवी गाना गातीं। इसी तरह कमलादेवी ने ग्रेटा से 'जन गण मन' गाना सीखा जो ग्रेटा ने स्वयं रवींद्रनाथ टैगोर से सीखा था। तब उन्हें मालूम नहीं था कि यही गीत एक दिन स्वतंत्र भारत का राष्ट्रगीत बन जाएगा। कुछ समय बाद कमलादेवी ने हरींद्रनाथ के पास इंग्लैंड जाने का फैसला किया। वे अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने लगीं। उन्होंने नौकरी आदि करने के बारे में कभी नहीं सोचा था। गिरिजाबाई और ग्रेटा के प्रभाव से उनके मन में समाज सेवा की भावना बलवती हो चुकी थी।

कैंब्रिज में एक शुभचिंतक ने उन्हें समाजशास्त्र के अध्ययन की सलाह दी। कमलादेवी अपने देशवासियों की सेवा करने की क्षमता हासिल करना चाहती थीं। अतः उन्होंने बेडफोर्ड कॉलेज लंदन में प्रवेश ले लिया, जहां समाज शास्त्र विषय के रूप में पढ़ाया जाता था। आधा

दिन कक्षा में और आधा दिन व्यावहारिक कार्य के लिए लंदन की निर्धन ईस्ट एंड बस्ती में गुजारती थीं।

रंगमंच आंदोलन

हरींद्रनाथ और कमलादेवी दोनों को रंगमंच का शौक था। इंग्लैंड में रहते हुए उन्होंने तय कर लिया कि भारत लौटकर वे रंगमंच आंदोलन चलाएंगे। सन् 1918 में भारत लौटने पर रिटर्न्ड फ्रॉम एबरॉड नामक हास्य नाटक में कमलादेवी ने नायिका की भूमिका निभाई। वे गांधी जी से मिले और उनके आग्रह पर दोनों उनके आश्रम में गए। दोनों नियमित रूप से चर्खा कातते थे। कमलादेवी ने कपड़ा बुनना भी सीखा।

धीरे-धीरे देशव्यापी रंगमंच आंदोलन खड़ा करने की उनकी योजना साकार होने लगी। हरींद्रनाथ नाटक लिखते तथा संगीत संयोजन करते और कमलादेवी दृश्य रचना तथा वेशभूषा आदि का काम संभालती। हरींद्रनाथ नायक की भूमिका निभाते तो कमलादेवी नायिका की। कमलादेवी ने कहा, "हमारा विचार है कि नाटक और रंगमंच जीवन के महत्वपूर्ण सामाजिक पहलू है।" उनके नाटक जाति-प्रथा, अस्पृश्यता जैसी सामाजिक समस्याओं पर आधारित होते थे।

सन् 1923 में कमलादेवी की पहली और एकमात्र संतान, राम का जन्म हुआ। बच्चे का नाम महान संत और समाज सुधारक रामकृष्ण परमहंस के नाम पर रखा गया। राम को मधुर कंठ का गुण मां से तथा अभिनय कला माता और पिता दोनों से विरासत में मिली। कुछ बड़ा होते ही वह अपने मां-बाप के साथ दौरों पर जाने लगा। वह नाटक में बालक का अभिनय करता तथा गीत गाता था। यह नाटक मंडली स्थायी संगठन बन जाती, किंतु तभी हरींद्रनाथ को दोबारा विदेश जाना पड़ा। जब वे वहां से लौटे तो सन् 1930 का आंदोलन आरंभ हो चुका था। वे राजनीति में कूद पड़े। कमलादेवी प्रारंभ में स्वयं-सेविका के रूप में राष्ट्रीय आंदोलन के साथ जुड़ी और बाद में वे

इंडियन नेशनल कांग्रेस में महिला कार्यकर्ताओं की संयोजिका बन गईं। अंततः वे कांग्रेस कार्यकारिणी की सदस्य बन गईं।

सन् 1928-29 में कमलादेवी ने 'वसंत सेना' नामक फिल्म में छोटी-सी भूमिका की। परंतु उन्हें अधिक लगाव रंगमंच से ही था। सन् 1945 में उन्होंने मुंबई में इंडियन नेशनल थियेटर की स्थापना की। सन् 1946 में पेरिस में मुख्यालय बनाकर यूनेस्को द्वारा इंटर थिएटर इंस्टिट्यूट स्थापित होने के बाद कमला देवी ने भारतीय इकाई के रूप में भारतीय नाट्य संघ की स्थापना की।

भारतीयों को अपनी धरोहर की शिक्षा देने के लिए उन्होंने नाट्य शिल्प संग्रहालय की स्थापना की और सन् 1946 में दिल्ली में पहले लोक नाट्य महोत्सव का आयोजन किया।

सन् 1950 के दशक से कमलादेवी विदेशों में रंगमंच का अध्ययन करने लगीं। इस सिलसिले में उन्होंने अमेरिका, रूस, हंगरी और जापान की यात्रा की। ऐसी बहुत सी यात्राओं पर तो स्वयं सरकार ने उन्हें भेजा। उन्होंने चेकोस्लोवाकिया में नाटक और कठपुतलियों के खेलों के प्रदर्शन देखे।

सन् 1952 में जब वे अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड की अध्यक्ष चुनी गईं। तब इस हैसियत से उन्होंने नाट्य शिल्पों से तादात्म्य स्थापित किया। इनमें वेशभूषा, शिरोवस्त्र, आभूषण, कठपुतलियों, मुखौटे और संगीत वाद्य शामिल थे।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पूर्व निदेशक इब्राहीम अलकाजी ने बताया है कि मुम्बई में उनके नाटकों का मंचन देखने के लिए वे हर बार प्रेक्षागृह में सीढ़ियों की छह-छह पंक्तियां चढ़कर जाती थीं।

राजनीति में

कमलादेवी ने सुना कि गांधीजी सत्याग्रह सभा (फरवरी, 1919) में शुरू करने जा रहे हैं जिसके सदस्यों ने रॉलट एक्ट का उल्लंघन करने की शपथ ली। इस कानून के तहत बिना अदालती कार्रवाई किए किसी

को भी जेल में डालने का अधिकार सरकार को मिल गया था। इस आंदोलन को शुरू करने के लिए गांधी जी को 6 अप्रैल, 1919 को मुंबई में मौजूद रहना था। इसी मौके पर कमलादेवी ने पहली बार उस महान् व्यक्ति के दर्शन किए और उन्हें बोलते हुए सुना।

उन्होंने सन् 1924 में बेलगांव कांग्रेस में स्वयंसेवक के रूप में अपना नाम दर्ज कराया। इस अधिवेशन की अध्यक्षता गांधीजी ने की। कमलादेवी को हमेशा इस बात का गर्व रहा कि उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन झाड़ू और बाल्टी लेकर एक स्वयंसेवक के रूप में शुरू किया। वहां काफी दूर तक पैदल चलना पड़ता, कठिन व्यायाम करने पड़ते और रात को शिविर में रक्षा की ड्यूटी करनी पड़ती।

कुछ महीने बाद टाइफाइड हो जाने पर जब उन्हें आराम करना पड़ा तो उन्होंने स्वयंसेवक के रूप में अपने अनुभव लिखे। गंभीर लेखन का यह उनका पहला प्रयास था जिसमें उन्हें काफी सुख मिला।

कमलादेवी सेवादल के कार्यों में काफी समय लगाने लगीं। वे केंद्रीय प्रशिक्षण अकादमी में भरती हो गईं, जहां शारीरिक अभ्यास कराया जाता था। वहां डंडा, भाला, लाठी, तलवार, छुरी आदि चलाने तथा सूर्यनमस्कार और अन्य योगासनों का अभ्यास कराया जाता था। किसी भी स्वयंसेवक को कोई वेतन आदि नहीं मिलता था। उन्हें केवल भोजन और वस्त्र दिए जाते थे।

सेवादल से कांग्रेस के झंडे को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा मिली और ध्वजारोहण तथा ध्वजावतरण नियमित रूप से समारोहपूर्वक किया जाता था। इस मौके पर झंडावंदन के गीत भी इस समारोह का अभिन्न अंग बन गए।

सन् 1927 में कांग्रेस ने कमलादेवी से मद्रास में वालंटियर कोर गठित करने के लिए कहा। तब तक वे कांग्रेस की सदस्य बन चुकी थीं और दिसंबर 1928 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की सदस्य चुनी गईं। वे इंडियन स्पेशल कांफ्रेंस की सचिव भी चुनी गईं परंतु एक वर्ष बाद उन्होंने ये पद छोड़ दिया क्योंकि इससे सन् 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन की तैयारी के सिलसिले में देश भर में चल रही राजनीतिक गतिविधियों के कारण उनका कार्य विघटित हो गया था।

उन दिनों कुछ समय के लिए कमलादेवी ने पुणे को अपना केंद्र बनाया। यह नगर तब राष्ट्रवादी गतिविधियों का केंद्र था। गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक और महिलाओं की स्थिति की बेहतरी के लिए लड़ने वाले महादेव गोविंद रानाडे जैसे महान सुधारक यहीं के थे। पूना सेवा सदर का काम-काज दो अत्यंत अनुशासित और शांत स्वभाव की महिलाएं जानकी बाई भट्ट और यमुनाबाई भट्ट देख रही थीं। जिन पर कमलादेवी अधिकाधिक विश्वास करने लगी थीं। पुणे में अपने प्रवास के दौरान वे सर्वेंट्स आफ इंडिया सोसाइटी के संपर्क में भी आईं। इससे पहले उन्होंने गोखले तथा देश की सेवा के लिए गठित उनके इस संगठन के बारे में सुन रखा था।

कमलादेवी गोखलेजी से कभी मिली नहीं थीं। परतुं उनके भाषण तथा लेख पढ़े थे जो उनकी मां ने पुणे से मंगाए थे। इन रचनाओं से वे काफी प्रभावित हुई थीं और उन्हें पहले-पहल सेवा की प्रेरणा उनकी इस बात से मिली कि व्यक्ति को अपना जीवन जीते हुए दूसरों की सेवा अवश्य करनी चाहिए। सोसाइटी के जिस महत्वपूर्ण सदस्य से कमलादेवी सबसे पहले मिलीं, वे थे वी. एस. श्रीनिवास शास्त्री। सन् 1923 में जब वे दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दुर्दशा से अवगत कराने के लिए दौरे पर थे तो उन्होंने कमलादेवी को भी बोलने को कहा। कमलादेवी को घबराहट हो रही थी। उस समय उनकी उम्र केवल 20 वर्ष थी और स्कूल में वाद-विवाद प्रतियोगिता के सिवा उन्होंने कभी भाषण नहीं दिया था। जब हिम्मत बटोरकर वे बोलीं और अगले दिन स्थानीय अखबारों में उनके भाषण की प्रशंसा हुई। (सुर्खियों में छापा गया "वे आईं, बोलीं और विजयी हुईं") तो उन्हें पता चला कि उनमें भाषण देने की प्रतिभा मौजूद है।

महिलाओं की भलाई

सन् 1927 में नई शिक्षा नीतियों के बारे में सम्मेलन पुणे में करने का फैसला किया गया क्योंकि उन दिनों वह महिला-शिक्षा का प्रमुख

केंद्र था। अधिकतर गतिविधियों का केंद्र सेवा सदर था जिसके नेताओं ने रोजमर्रा कामकाज संभाला हुआ था। कमलादेवी ने स्वयंसेवक के रूप में छोटे-मोटे काम संभालने की इच्छा प्रकट की और उन्होंने रेलवे स्टेशन पर रात को पहुंचने वाले प्रतिनिधियों की अगवानी की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने इस मौके के महत्व को समझा क्योंकि इसी सम्मेलन में ऑल इंडिया विमेंस कांफ्रेंस का जन्म हुआ। जिसने आगे चलकर करीब 30 वर्ष तक देश के राष्ट्रीय मामलों में, विशेषकर भारतीय महिलाओं की स्थिति बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसी मौके पर कमलादेवी की मुलाकात उस समय की अधिकतर महिला नेताओं से हुई। सम्मेलन समाप्त होने पर सरोजिनी नायडू ने उन्हें महासचिव का पद संभालने को कहा। इससे पहले कि कमलादेवी इंकार कर पातीं, सरोजिनी नायडू ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश कर दिया। कमलादेवी घबरा गईं। उन्होंने ग्रेटा को बताया कि उन्हें डर था कि इतनी बड़ी-बड़ी महिलाओं के सामने मेरी बदनामी न हो जाए।

कमलादेवी ने सचिव पद का काम बड़ी गंभीरता से संभाला। वे अपने कार्यालय का प्रबंध स्वयं संभालती थीं। असल में एक तरह से वे खुद ही कार्यालय थीं। उन्होंने शार्टहैंड और टाइपिंग सीख ली। वे डाकघर में पत्र डालने से लेकर दफ्तरी तक के सारे काम खुद किया करती थीं। उन्होंने कहा, "मुझे खुशी है कि मैंने सभी काम स्वयं किए, क्योंकि इससे मैं आत्मनिर्भर बन सकी।"

विभिन्न सम्मेलनों में जाने के लिए उन्होंने रेलवे को मासिक आधार पर रियायती टिकट देने को राजी किया जिससे एक यात्रा के टिकट पर दो यात्राओं की सुविधा मिल सके। इससे बच्चों और घर के बोझ से मुक्त होकर महिलाएं अकेली ही लंबी यात्राएं कर सकती थीं।

निम्न आय वर्ग की महिलाओं के साथ सतत संपर्क रहने से ही कमलादेवी को ज्ञात हुआ कि वे किन हालात में रहती हैं। उन्होंने महिला श्रमिकों की समस्याओं में गहरी दिलचस्पी ली।

मदुरै में बड़ी कपड़ा मिलों के मालिकों ने नोटिस लगाकर मजदूरों से अपनी यूनियन भंग करने को कहा। कमलादेवी के भाषणों से

महिलाओं को इसका विरोध करने की प्रेरणा मिली और उन्होंने अपने पतियों को यूनियन न तोड़ने को तैयार किया। मंगलौर नगर में मजदूर संघों को संगठित करने का काम सबसे पहले कमलादेवी ने ही किया।

विमेंस कांफ्रेंस ने महिला मजदूरों की समस्याओं को उठाया। कमलादेवी ने बंगाल और असम में सर्वेक्षण किए। सन् 1930 के दशक में भारत से काजू का निर्यात शुरू हुआ तो काजू की गिरी को चिकना बनाने की जरूरत महसूस हुई। उन्हें कटने के निशान से बचाने के लिए मजदूरों को, जो लगभग सभी महिलाएं थीं, चाकू इस्तेमाल करने से रोक दिया गया। इसका मतलब था कि उन्हें अपने नाखूनों से ही काजू छीलना पड़ेगा। इसके विरोध में कमलादेवी ने काजू के सबसे बड़े केंद्र मंगलौर में हड़ताल करा दी।

कमलादेवी के महासचिव बनने से कई असाधारण परिणाम परोक्ष रूप से सामने आए। वे नई दिल्ली में असेंबली की इमारत में जो अब ससंद भवन है, आने-जाने लगीं। वहां वे उस समय के प्रतिष्ठित नेताओं-लाला लाजपत राय, देवर चुनरलाल, तुलसी गोस्वामी, आर.के. षण्मुखम चेट्टि, मोहम्मद अली जिन्ना आदि से मिलीं।

एक बार वे कुछ मुद्रित सामग्री लेकर मोतीलाल नेहरू के पास उनकी सहायता मांगने गईं। मोतीलाल नेहरू ने उनसे कहा, "क्या तुम समझती हो कि तुम जैसी छोटी-सी लड़की की बातें मानकर हम सब इस काम को गंभीरता से लेने लगेंगे?" कमलादेवी स्तब्ध रह गईं। उनका मन किया कि धरती फट जाए और वे उसमें समा जाएं। परंतु उन्होंने हिम्मत करके कहा, "यदि आप चाहें तो मैं अपनी जगह बुजुर्ग अनुभवी औरतों को भी ला सकती हूं। इस पहली मुलाकात के फलस्वरूप उन्हें इलाहाबाद में आनंदभवन आने का बुलावा मिला और नेहरू परिवार के साथ उनकी मित्रता हुई।

सन् 1929 में कमलादेवी कई सम्मेलनों में भाग लेने के लिए यूरोप गईं। इस यात्रा के दौरान अनेक घटनाएं हुईं। बर्लिन में यह देखकर कमलादेवी का मन रो उठा कि अन्य सभी देशों के अपने ध्वज थे, जबकि भारतीय लोग ब्रिटिश ध्वज यूनियन जैक के नीचे जमा हुए थे।

उन्होंने आयोजकों से शिकायत की कि उनके देश का झंडा क्यों नहीं लगाया गया? उनका जवाब था कि उन्हें मालूम नहीं है कि भारत का अपना ध्वज भी है। कमलादेवी ने जोर देकर कहा कि भारत का अपना ध्वज है और वे उसे फहराने के लिए पेश करेंगी। भारतीय प्रतिनिधियों ने अपनी साड़ियों से टुकड़े लेकर सफेद हरे और केसरिया रंग का भारतीय तिरंगा झंडा तैयार किया।

परंपराओं को प्रोत्साहन

यूरोप की यात्रा से कमलादेवी नए विचार लेकर भारत लौटीं। उन्होंने स्कूलों में लोकनृत्यों को बढ़ावा देना शुरू किया। महिलाओं द्वारा तैयार हस्तशिल्प वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाने तथा प्रतिनिधियों की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाने की प्रथा चल पड़ी। कमलादेवी ने नाट्य शैलियां विकसित कीं और मंचन करने वाली नाटक मंडलियों को प्रोत्साहित किया। यही बात शिल्प के बारे में थी। उन्होंने कपड़ों के कई परंपरागत डिजाइन एकत्रित किए। इसने उन्हें ऐसे रास्ते पर डाल दिया जिसे कुछ वर्ष बाद उन्होंने अपनाया और उसके शानदार परिणाम दिखाई दिए।

सन् 1929 में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा था 'पूर्ण स्वराज' के लिए संघर्ष। कमलादेवी ने पांच हजार लोगों की सभा में भाषण दिया। उस समय वे अत्यंत सुंदर लग रही थीं। छरहरा बदन, बड़ी-बड़ी चमकदार आंखें, लंबे सुंदर केश तथा छोटे-छोटे कोमल हाथ-पांव—उन्हें 'स्वतंत्रता संग्राम की सर्वाधिक रोमानी प्रतिमा कहा जाता था। उन्होंने मराठी साड़ी पहन रखी थी। कानों में मोतियों के झुमके पहन रखे थे और बड़ी-सी बिंदी लगा रखी थी। लोगों ने मंत्रमुग्ध होकर उनका भाषण सुना।

26 जनवरी, 1930 का दिन स्वतंत्रता के लिए काम करने की शपथ लेने का दिन था। उस दिन दोपहर बाद आजाद मैदान (खुला मैदान) में लाखों लोग शपथ लेने के लिए उमड़ पड़े। सभी की निगाहें उस

ध्वज दंड की ओर थीं जिस पर तिरंगा लहरा रहा था।

कमलादेवी उस समय झंडे के करीब खड़ी थीं जब हंसिया और हथौड़े वाला लाल झंडा लिए कुछ लोग अचानक वहां पहुंचे और राष्ट्रीय ध्वज के समीप अपना झंडा लगाने का प्रयास करने लगे। अफरातफरी मच जाने से लाल झंडा फट गया और उन लोगों ने बदला लेने के लिए तिरंगा झंडा फाड़ने की कोशिश की। समय की अनिवार्यता देखते हुए बिना परिणाम सोचे अविलंब कमलादेवी ने अपना शरीर झंडे के आगे कर उसे दोनों हाथों से थाम लिया। उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि उनके हाथों पर चोट लग चुकी थी और रक्त टपक रहा था।

उनके चारों ओर खड़े लोग राष्ट्रभक्ति के गीत गाते रहे। तभी उन्होंने कुछ लोगों को कहते सुना, "शाबाश! बहुत बढ़िया! उन्होंने हमारे ध्वज का अपमान होने से बचा लिया।" एक व्यक्ति ने धीरे से कमलादेवी के हाथों से बह रहा खून पोंछ दिया। वे थे चन्द्र भेर जौहरी, जिन्होंने संदेश पहुंचाने तथा कई अन्य कठिन काम जिन्हें बड़े नहीं कर सकते, करने के लिए प्रशिक्षित बच्चों की वानर सेना का गठन किया था।

सविनय अवज्ञा आंदोलन ज्यों-ज्यों जोर पकड़ता गया नमक शब्द बहुत महत्वपूर्ण होता गया। महात्मा गांधी ने नमक कानून तोड़ने के लिए 12 मार्च, 1930 को साबरमती आश्रम से गुजरात के समुद्र तट पर डांडी तक की करीब दो सौ मील की ऐतिहासिक यात्रा प्रारंभ की।

जब इस यात्रा की तैयारियां की जा रही थीं तो स्वयंसेवकों में महिलाओं को भी शामिल करने का निश्चय किया गया। कमलादेवी ने महात्मा गांधी से मिलकर कुछ स्त्रियों को यात्रा में शामिल होने की अनुमति देने का अनुरोध किया। कमलादेवी ने कहा, "यदि स्त्रियों को यात्रा में शामिल होने का मौका दिया गया तो उनमें जिम्मेदारी और समर्पण की भावना आएगी।" इसके फलस्वरूप कमलादेवी तथा अनर्तिकाबाई गोखले को कानून तोड़ने वालों के पहले जत्थे में सम्मिलित किया गया।

नमक तैयार कर लिया गया और अगली कार्रवाई थी उसकी बिक्री। कमलादेवी नीलामी नमक द्वारा नमक बेचने के लिए मुंबई शेयर बाजार पहुंची। पहली थैली 501 रूपए में बिकी। आधे घंटे में ही उन्होंने 4,000 रूपए की बिक्री कर दी।

एक दिन तो मुंबई हाईकोर्ट में ही नमक बेचकर उन्होंने अंग्रेजों को उनके ही मैदान में जाकर मात दे दी।

कमलादेवी ने मुंबई के बाहरी इलाकों में कड़ाहों को लूटने की योजना बनाई। उनका काम था बड़ी संख्या में लोगों को जमा करना। परंतु धावा बोलने के अवसर पर 1 जून, 1930 को कमलादेवी को गिरफ्तार कर लिया गया। सात वर्षीय राम जो उनका प्रतिनिधि था। उसने गर्वपूर्वक बैनर उठाया। मजिस्ट्रेट ने उन्हें छह महीने की साधारण कैद की सजा सुनाते हुए कहा कि कमलादेवी ने अन्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा व्यक्तियों को कानून तोड़ने के लिए उकसाया है।

सन् 1930 में पूरे देश में असंतोष व्याप्त था। सत्याग्रह आंदोलन के साथ-साथ हिंसक घटनाएं भी हो रही थीं। सन् 1931 में जेल से रिहा होने के बाद कमलादेवी को सेवकदल के स्वयंसेवकों का प्रभारी बना दिया गया। उन्हें महिलाओं को प्राथमिक चिकित्सा से अग्निशमन कार्य तथा लाठी गोली झेलने आदि का प्रशिक्षण देना था।

इस समय तक अपने पति हरींद्रनाथ से उनका संबंध विच्छेद अंतिम रूप से हो गया था। कमलादेवी को लगा कि यदि हर कदम पर परिवार की तरफ से बाधा खड़ी की जाती रही तो उनके लिए स्वाधीनता की लड़ाई जारी रख पाना असंभव था। जिस समय कमलादेवी जेल में थीं, हरींद्रनाथ अरविंद आश्रम में चले गए और तीन वर्ष तक वहीं रहे। राम मंगलौर में था। पिता के पास से नानी के पास और वहां से फिर पिता के परिवार में मिल जुल कर रहा और खुश रहा।

राम ने सन् 1939 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। उन दिनों राजनीतिक क्षेत्र में विशेष गतिविधियां नहीं थीं। अतः इस मौके का उपयोग करते हुए कमलादेवी ने राम को विदेश में किसी अच्छे कॉलेज में भरती कराने का विचार किया। वे स्कैंडिनेवियाई देशों में गए जहां

सहकारिता सशक्त रूप से विकसित हो चुकी थी। कमलादेवी ने सहकारी समितियों की कार्यप्रणाली का अध्ययन किया। आर्कटिक वृत्त को पार करने के बाद कमलादेवी और राम ने आधी रात को सूर्य देखा। उन्होंने ट्रेकिंग तथा पर्वतारोहण का भी आनंद लिया।

इस बीच कमलादेवी को व्हाइट हाउस में श्रीमती रूजवेल्ट के साथ चाय के लिए निमंत्रण मिला। 12 जनवरी, 1941 को बॉम्बे क्रॉनिकल ने हॉलिवुड में कमलादेवी के सम्मान में आयोजित पार्टी का चित्र प्रकाशित किया। अमेरिका में आम धारणा यह थी कि भारत योग, सर्पों तथा भविष्यवक्ताओं का ही देश है। न्यूयार्क में एक दिन एक छोटी-सी लड़की उनके पास आई और अपनी हथेली उनके सामने करते हुए बोली, "मैडम, कृपया मेरा भविष्य बताइए।"

लेखन

भारत लौटकर अन्य कई पुस्तकें लिखने के साथ-साथ उन्होंने अपने अनुभवों पर पुस्तक लिखी। इनमें अमेरिका *दि लैंड ऑफ सुपरलेटिव्ज़, अंकल सैम्स एम्पायर* और *टुवर्ड्स ए नेशनल थियेटर* शामिल हैं। इसके अलावा उन्होंने सूरत में अब्रम में ऑल इंडिया वीमेंन्स कांफ्रेंस (अखिल भारतीय महिला सम्मेलन) के लिए शिविर का आयोजन किया। कमलादेवी सम्मेलन की अध्यक्ष चुनी गईं। यह सन् 1942 का वर्ष था जब देश में महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाएं घटित हो रही थीं।

कमलादेवी को दो वर्ष की कैद हो गई । यह समय उन्होंने पढ़ने-लिखने में बिताया। सन् 1944 में जेल से बाहर आने पर उन्होंने सारे देश का भ्रमण किया। सन् 1942-43 में बंगाल के अकाल के दौरान खोले गए बहुत से अनाथालय तथा आश्रम गृह उपेक्षित पड़े थे। अब कमलादेवी ने "बच्चों को बचाओ," नारे के साथ उनकी भलाई को अपना विशेष कार्य मानकर इन संस्थाओं की ओर ध्यान देना शुरू किया। बच्चों की देखभाल एवं शिक्षा के लिए कई नए संस्थान खोले। उन्होंने बच्चों की देखरेख तथा शिक्षा के कार्य में लगे युवाओं

के प्रशिक्षण के लिए छात्रवृत्ति दिलाने की भी व्यवस्था की।

जब उन्होंने देखा कि मुंबई शहर से बाहर चिकित्सा का कोई अच्छा इंतजाम नहीं है तो उन्होंने चलते-फिरते चिकित्सालय शुरू करने का सुझाव दिया। उन्होंने कामकाजी लड़कियों के लिए हॉस्टल खोलने की दिशा में भी शुरूआत की। उन्होंने इस काम पर पूरा ध्यान दिया। न केवल बड़े शहरों में बल्कि जिले के कस्बों में भी लड़कियों के लिए हॉस्टल खोले गए। इस क्षेत्र में उनके योगदान को देखते हुए नई दिल्ली में ऑल इंडिया विमेंस कांफ्रेंस के हॉस्टल का नाम उनके नाम पर रखा गया।

सन् 1946 में कमलादेवी को कांग्रेस कार्यकारिणी की सदस्य चुने जाने का गौरव प्राप्त हुआ। परंतु उन्होंने असेंबली की सदस्य बनने से मना कर दिया। उनकी राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वे राजनीति में स्वतंत्रता प्राप्ति के—खास उद्देश्य से आई थीं और आजादी मिल जाने के बाद कोई भी उन्हें राजनीति में बने रहने के लिए राजी नहीं कर सका।

जैसा कि उन्होंने 23 जनवरी, 1966 के *भारत ज्योति* में प्रकाशित लेख 'रिफ्लेक्शंस आफ्टर सिक्स्टी' में भी लिखा, "जब भारत स्वतंत्र हुआ तो मैं व्यक्तिगत रूप से भी आजाद हो गई। मैं राजनीति के राजमार्ग को छोड़कर रचनात्मक कार्य की गली में उतर आई और कारीगरों, कलाकारों आदि के बीच काम करने लगी जो कलात्मक वस्तुओं का सृजन एवं निर्माण करते हैं।"

कमलादेवी को कई महत्वपूर्ण पदों की पेशकश की गई। उन्होंने पहले कैबिनेट मंत्री और बाद में मास्को व काहिरा में राजदूत पद के प्रस्ताव ठुकरा दिए।

अब चूंकि वे स्वतंत्र थीं तो सब काम जो उन्हें पसंद थे, वे स्वतंत्रता से कर सकती थीं।

ब्रिटेन द्वारा 15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि के एक मिनट पश्चात् हुए उत्कृष्ट और भव्य समारोह में भारत को सत्ता हस्तांतरण हुआ। हर एक भारतीय के लिए आनंद की घड़ी थी। भारत विभाजन के

कारण लाखों की तात्कालिक आवश्यकताएं पूरी करने के लिए औषधालयों तथा लंगरों की व्यवस्था की गई। परंतु अकेली कमलादेवी ही थीं जिनका ध्यान इन लोगों के भविष्य की ओर गया। वे प्रतिदिन किंग्जवे कैंप जाकर पता करतीं कि इन्हें अपने पांव पर खड़ा होने लायक बनाने के लिए क्या किया जा रहा है।

सन् 1947 का सितंबर का महीना था। कमलादेवी ने अश्रुपूरित नेत्रों से हजारों गरीब लोगों को दिल्ली आते देखा तो उनके मन में विचार कौंधा, "झंझावात में गिरे पत्तों की तरह बिखरे ये लोग क्या अपनी क्षमता और प्रतिभा का मिलजुल कर इस्तेमाल करके अपना जीवन नहीं बना सकते?" इसका एक ही उत्तर उनके पास था, 'सहयोग'।

उन्होंने लिखा, "बचपन से ही मेरी इच्छा कुछ नया कर दिखाने की रही है। मैं बचपन से ही खड़िया और रंगों से, मिट्टी और लकड़ी से भजनों और गीतों से मन बहलाव करती रही तथा छोटी-छोटी चीजें बनाती रही हूं। मैंने एक बड़े नाटक का सपना देखा था जिसमें मैं भी भूमिका निभा पाती। अब वही मेरे सामने था जिसके लिए मैंने जीवन भर प्रतीक्षा की—एक विस्तृत फलक, मानवीय मिट्टी तथा स्वयं जीवन द्वारा उपलब्ध कराया गया रंगमंच।"

आज भारतीय सहकारिता संघ के साथ 25 कृषि समितियां संबद्ध हैं जिनकी 1,500 से अधिक परिवारों की सदस्यता है।

कमलादेवी ने जिस एक और नई प्रणाली का शुभारंभ किया, वह थी संघटित ऋण प्रणाली जिसकी अक्सर नकल की जाती रही है। किसानों को ऋण तथा विशेषज्ञों की सलाह उपलब्ध कराई गई। कमलादेवी ने जोर दिया कि कृषि उपज दुग्ध उद्योग और मुर्गी-पालन के साथ-साथ फल, सब्जियां और फूल उत्पादन को बढ़ावा दिया जाए।

महिलाओं की ओर कमलादेवी विशेष ध्यान देती थी। उन्होंने वस्त्र बनाने, खाद्य पदार्थ बनाने तथा मसाले तैयार करने, अचार, चटनी और कागज बनाने, कशीदाकारी करने तथा खिलौने बनाने जैसे विविध प्रकार के कार्यों के लिए महिलाओं की अनेक सहकारी समितियां गठित कीं। उन्होंने बुनकरों को संगठित किया, उन्हें ऋण

तथा अन्य सुविधाएं दिलवाईं और हथकरघा सहकारी समितियां बनाईं।

सन् 1966 में उन्हें सामुदायिक नेतृत्व के लिए मेगसेसे पुरस्कार प्रदान किया गया।

हस्तशिल्प

अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड का गठन सन् 1952 में हुआ। कमलादेवी को खादी को आकर्षक बनाने के लिए अनेक डिजाइन विकसित करने तथा हर स्थान से हस्तशिल्प की वस्तुएं एकत्र करने जैसे अनेक अनुभवों को देखते हुए उन्हें बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया।

उन्होंने कॉटेज एंपोरियम का काम संभाला और यह दिल्ली की एक प्रतिष्ठित दुकान के रूप में प्रसिद्ध हो गया। कमलादेवी का मानना था कि हस्तशिल्प से देश की प्रगति में मदद मिली है। उन्होंने हस्तशिल्पों की तलाश के प्रयास किए। इसके लिए उन्हें कई जगहों पर जाना पड़ा। उन्होंने देश के छोटे-छोटे गांवों और अछूते इलाकों में जाकर यह काम किया। उन्होंने देश का कोना-कोना छान डाला। वे हर शिल्पकार से मिलीं। उनके लिए कोई जगह दूर और कोई कलाकार छोटा नहीं था। एक बार कमलादेवी ने चंबा की एक महिला से मिलना चाहा जो कशीदाकारी के लिए मशहूर थी। उनके मातहत काम करने वाले अधिकारियों ने कहा, "आपका वहां जाना बहुत मुश्किल है। वह जगह बहुत गंदी और बदहाल है।" इसके बावजूद वे उस प्रतिभाशाली महिला से मिलने गईं। कमलादेवी को अपने सामने पाकर उसकी आंखों में आंसू छलछला आए। कमलादेवी ने उस महिला के लिए पुरस्कार की सिफारिश की और अगले वर्ष वह महिला बड़े समारोह में पुरस्कार ग्रहण करने के लिए खड़ी थी।

साड़ियों के लिए विख्यात स्थान पैठण में कमलादेवी को बहुत कम बुनकर दिखाई दिए। उन्होंने उनका एक समूह बनाया और उनका काम दिल्ली ले आईं।

कश्मीर के कारीगर उन्हें "हस्तकला मां" (हस्तशिल्प की माता)

कहते थे और अपनी सर्वोत्कृष्ट कृतियां उन्हें दिखलाया करते थे।

उन्होंने बालूचर व तंचोई की सुंदर बुनाई और कश्मीर के कीमती और भारी जामावार शालों की कला पुनर्जीवित करने के भी प्रयास किए।

शिल्प और शिल्पकारों का पता लगा लेने के बाद अगला काम था उस शिल्प के संरक्षण और विकास की ओर ध्यान देना। इसके लिए भारत तथा विदेशों में प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। जिन क्षेत्रों में कोई शिल्प प्रचलित था उनमें उस शिल्प के डिजाइन केंद्र स्थापित किए गए तथा परंपरागत डिजाइन भी एकत्र किए गए।

कमलादेवी संगीत की बहुत शौकीन होने के साथ-साथ स्वयं भी संगीतकार थीं। उन्हें भारतीय संगीत वाद्यों के खराब रूप तथा स्वर से बहुत निराशा होती थी। उन्होंने परंपरागत ढंग से प्रामाणिक संगीत वाद्य तैयार करवाने के उद्देश्य से मद्रास में एक केंद्र की स्थापना की।

कठपुतली तथा कलमकारी चित्रकला के केंद्र भी खोले गए। सन् 1962 में हस्तशिल्प बोर्ड की अध्यक्ष की हैसियत से कमलादेवी ने उत्तर-पूर्व सीमांत एजेंसी (अरूणाचल प्रदेश) और नागालैंड का दौरा किया। इन क्षेत्रों में जाने वाली वे पहली भारतीय महिला थीं। वे जनजातीय लोगों के लिए कुछ करना चाहती थीं।

इन सब प्रयासों से देश में शिल्प की अपार संपदा लोगों के सामने आई और हस्तशिल्प उद्योग देश में सबसे अधिक रोजगार देने वाला उद्योग बन गया, जिसमें 10 लाख से अधिक व्यक्तियों को काम मिला।

कमलादेवी का सबसे बड़ा योगदान था शिल्पकारों की प्रतिष्ठा बढ़ाना। उन्होंने महसूस किया कि वे कलाकार हैं। जब उन्हें संगीत-नाटक अकादमी की फेलोशिप मिली तो उन्होंने महसूस किया कि इसके लिए तो शिल्पकारों का शुक्रिया अदा किया जाना चाहिए।

पुरस्कार

उन्होंने शिल्पकारों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की शुरूआत की। तब से हर वर्ष शिल्पकार दिल्ली आकर राष्ट्रपति पुरस्कार ग्रहण करते हैं।

सन् 1956 में कमलादेवी ने पश्चिम अफ्रीका के शिल्पों का अध्ययन करने के लिए वहां की यात्रा की। सेनेगल की राजधानी डकार में सन् 1967 में आयोजित नीग्रो कला समारोह में उन्हें राष्ट्रपति की अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

सन् 1964 में विश्व शिल्प परिषद् की स्थापना हुई और न्यूयॉर्क में इसका मुख्यालय बनाया गया। एशियाई देशों को प्रतिभागी के रूप में वहां लाने का दायित्व कमलादेवी को सौंपा गया। वे परिषद् की उपाध्यक्ष बनाई गईं।

कमलादेवी ने अनेक अंतराष्ट्रीय राम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने यूनेस्को तथा मानव अधिकार आयोग में भारत सरकार के प्रतिनिधि नाते भाग लिया।

इस दौरान उन्होंने हाथी के दो बच्चे लॉस एंजेलिस, अमेरिका तथा ऑस्ट्रेलिया के बच्चों को भेंट स्वरूप भेजे। ये भारतीय नाट्य संघ की ओर से भेंट किए गए। इनमें से एक का नाम गीता और दूसरे का अपनी दात्री के नाम पर कमला था।

इसके बाद कमलादेवी को लगातार पुरस्कार मिलने लगे। सन् 1962 में उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में सेवाओं के लिए होनोलूलू, हवाई, में शुरू किया गया वाटुमल फाउंडेशन पुरस्कार प्रदान किया गया। तत्कालीन चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय सद्भाव बढ़ाने के लिए अपने देश का स्वर्ण पदक दिया। विश्वभारती विश्वविद्यालय ने उन्हें देशिकोत्तम उपाधि से सम्मानित किया। वे इतनी विनम्र थीं कि सन् 1966 में मेगसेसे पुरस्कार मिलने की खबर पाकर बोली, "जरूर कहीं कोई गलती हुई है। यह पुरस्कार तो महान विभूतियों को दिया जाता है।"

कमलादेवी का जीवन भारत के सर्वाधिक उत्तेजनापूर्ण इतिहास के 50 से अधिक वर्षों को अपने में समेटे था। और राजनीति से लेकर रंगमंच, महिला अधिकार और शिल्प सहकारिता तक के विविध क्षेत्रों में वे सक्रिय रहीं।

स्वतंत्रता संग्राम ने महिलाओं को घरों से बाहर निकलने तथा उस

महायुद्ध में सामूहिक रूप से भाग लेने की प्रेरणा दी। यह परिवर्तन स्वाभाविक ढंग से अपने आप नहीं आ गया। इसके लिए कमलादेवी जैसी समाज सुधारक और मार्गदर्शक महिलाओं ने अथक प्रयास किए।

कमलादेवी का बचपन एकाकी था। वे शर्मीली तथा अपने में सिमटी रहने वाली लड़की के रूप में बड़ी हुई जिसे भीड़ के सामने जाने, यहां तक कि किसी से रास्ता तक पूछने में संकोच होता था। परंतु भाग्य उन्हें दूसरी ही राह पर ले गया।

उन्होंने शिल्पकारों तथा उनके शिल्प के प्रति सेवा का अपना आदर्श इस कदर निभाया कि अपनी सारी अचल संपत्ति और मेगसेसे पुरस्कार से मिली राशि का बड़ा हिस्सा उन्होंने मंच शिल्प के लिए श्रीनिवास मल्लैया ट्रस्ट को दान कर दिया। निरंतर यात्राओं पर रहने के कारण उन्हें सारे विश्व में रंगमंच, डिजाइन और शिल्प के क्षेत्र में उभरने वाली नई-नई प्रवृत्तियों की पूरी जानकारी रहती थी। उन्होंने युवा लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। वे उनका मार्गदर्शन करने के साथ-साथ उनसे सीखने में भी विश्वास रखती थीं। वे कहा करती थीं, "मैं उनसे सीखती भी हूं। यह इकतरफा रास्ता नहीं है।"

एक बार रेडियो पर, 'काश! मैं फिर 21 साल की हो जाती' विषय पर मार्मिक वार्ता में कमलादेवी ने अपने जीवन की अपूर्ण इच्छाओं का ब्यौरा देते हुए कहा, "यदि मुझे 21 साल की उम्र से अपना जीवन फिर शुरू करने का मौका मिलता तो मैं सामान्य चीजों को अपनी छाती से लगाकर रखती और बड़ी चीजों को छोड़ देती। मैं ज्यादा से ज्यादा समय पढ़ने-लिखने पर लगाती, अपने बेटे के साथ समय बिताती तथा संगीत में खोई रहती।"

उनका विवाह हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय से हुआ जिनकी संगीत और अभिनय क्षमता उनके काव्यात्मक आदर्श की भांति ही ऊंची थी और दोनों ने "स्वप्न और अभिलाषाएं मिलकर पूरी करने" तथा भारत में नया रंगमंच आंदोलन खड़ा करने में खुद को समर्पित करने के लिए विवाह किया था।

कमलादेवी ने भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण लाने में अग्रणी

भूमिका निभाई। वे भारतीय शिल्प को ख्याति दिलाने की दिशा में जीवन भर अथक प्रयास करती रहीं। देश के कोने-कोने में गांव-गांव घूमकर उन्होंने शिल्पकारों से मुलाकात की, नए डिजाइन तथा नए विचार दिए और परंपरागत और आधुनिक प्रवृत्तियों में समन्वय करना सिखाया।

कमलादेवी का निधन 29 अक्टूबर, 1988 के ब्रीच केंडी अस्पताल में हुआ, जहां उन्हें हस्तशिल्पों की अखिल भारतीय प्रदर्शनी, शिल्पी उत्सव में अचानक तबीयत बिगड़ जाने पर दाखिल कराया गया था। उस समय वे 85 वर्ष की थीं।

"यह जीवन की छोटी-छोटी बातें थी जिन्हें मैंने सदैव चाहा जो मेरे लिए अनंततः अर्थपूर्ण थीं, क्योंकि मैं मूलतः मानवतावादी व्यक्ति हूं। मानव होने का आशय है साधारण वस्तुओं का चाहना और पाना जिन्हें हम प्रायः छू कर निकल जाते हैं या दूर फेंक देते हैं; यदि मैं फिर से 21 वर्ष की होती तो ऐसा न कर उन्हें अपने कोष में संकलित कर लेती।"

कमलादेवी चट्टोपाध्याय
(रेडियो वार्त्ता का अंश शीर्षक
'आह! यदि मैं पुनः 21 वर्ष की होती।')